प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य श्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

सुख–दुःख में सम रहना सीखें : युवाचार्य महाश्रमण

सरदारशहर, 26 अप्रैल,2010।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आदमी को हमेशा निंदा और प्रशंसा में सम रहना चाहिए, लेकिन आदमी की प्रवृत्ति है कि वह निंदा सुनकर कुंठित होता है और प्रशंसा सुनकर प्रफूल्लित हो जाता है जो उसकी साधना की कमी है। वे सोमवार को मंगलचन्द भंवरलाल बैद के आवास स्थल पर कार्यक्रम में श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आदमी के जीवन में मान सम्मान और विरोध कभी भी आ सकता है। भगवान महावीर को भी काफी कठिनाइयां आई थी लेकिन उन्होंने हर परिस्थिति को प्रसन्नता के साथ सहा और समता का प्रकाश प्राप्त किया।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आदमी को धैर्य कभी नहीं खोना चाहिए। धैर्य खो देने वाले आदमी में मनोबल की कमी का असर होता है। उन्होंने कहा कि सत्ता कभी सुख भोगने के लिए नहीं मिलती केवल सेवा करने के लिए होती है। आदमी के जीवन में अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों आती है, यदि दोनों ही समय आदमी सम रहे तो मन में कुंठा नहीं रहेगी। युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि लाभ, अलाभ, निंदा, प्रशंसा, सुख–दुःख, में भी आदमी को सैदव सम रहकर अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। यदि सारे लोग अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे तो दुनिया की व्यवस्था सुधर जाएगी। डॉ. छगनलाल शास्त्री ने संतों का स्वागत करते हुए विचार व्यक्त किए।

श्राविका वीणा जैन ने स्वरचित कविता प्रस्तुति की। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)